

संक्षिप्त समाचार

गिरौदपुरी धाम मेला में भंडारी सातीदार सम्मेलन का सफल आयोजन



रायपुर (विश्व परिवार)। गिरौदपुरी धाम में आयोजित गुरु दर्शन मेला में समाजसेवी मनोज बंजारे शामिल हुए और गुरु गद्दी दर्शन व पूजा अर्चना कर देश व प्रदेश की खुशहाली की कामना की। मनोज बंजारे ने जानकारी देते

हुए बताया कि इस पावन अवसर पर भंडारी सातीदार सम्मेलन का आयोजन भी किया गया था जिसमें प्रदेश भर से सैकड़ों की संख्या में लोग पहुंचे और सम्मेलन में भाग लिया और सतनामी समाज को बेहतर दिशा में ले जाने और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए विचार विमर्श किया गया। उन्होंने इस सम्मेलन में पधारे सभी लोगों का हृदय से आभार व्यक्त किया और समाज की उन्नति का संकल्प लिया।

नगर निगम भिलाई क्षेत्र में आवारा कुत्तों को पकड़ने का काम शुरू



भिलाई (विश्व परिवार)। नगर निगम भिलाई क्षेत्र में आवारा कुत्तों को पकड़ने का काम शुरू हो गया है। अभी खुरसीपार के बाईं क्रमांक 42 से शुरू किया गया है। आगे भी चलेगा। जो नागरिक अपने घरों में कुत्ता पाल रखे हैं। वह अपने कुत्तों को घर में बांध के रखें। उसके गले में पट्टा लगा दे, ताकि पकड़ने वालों को पता

चल जाए की कौन कौन सा कुत्ता घर का है। कौन सा कुत्ता स्ट्रीट डॉग है। धीरे-धीरे कुत्तों को पकड़ कर के बधिया करण किया जाएगा। जनसंपर्क विभाग, नगर पाली निगम भिलाई।

प्रारंभिक मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के चुनाव 2025 का आज दिनांक 5 मार्च 2025 बुधवार शाम 5:00 बजे चेम्बर कार्यालय में मुख्य निर्वाचन अधिकारी शिवराज भंसाली के हस्ताक्षर से प्रारंभिक मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया। प्रदेश के 27480 मतदाताओं की मतदाता सूची का प्रकाशन के समय निर्वाचन अधिकारी रमेश गांधी, बालकृष्ण दानी, के.सी. माहेश्वरी, महावीर तालेड़ा, अनिल कुचेरिया, संजय देशमुख, अमित वर्मा, चुनाव नियंत्रक एच.एस.कर, चुनाव कार्यालय प्रभारी एस.एम. रावते, सह प्रभारी शशिकांत गुप्ता उपस्थित थे। उक्त आयोज की जानकारी देते हुए निर्वाचन अधिकारी प्रकाश गोलछा ने बताया कि प्रारंभिक मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया प्रदेश के सभी मतदाताओं की सुविधा हेतु चेम्बर www.cgchamber.org वेबसाइट पर जिले के समस्त मतदाता ओपन कर देख सकते हैं। प्रकाशित मतदाता सूची का अवलोकन चेम्बर कार्यालय में समय सुबह 11 बजे से शाम 6 बजे तक कर सकते हैं किसी भी मतदाता को उसमें त्रुटि सुधार हेतु आवेदन दिनांक 6 मार्च गुरुवार से 8 मार्च शनिवार तक प्रातः 11:00 से दोपहर 2:00 बजे तक लिखित में आवेदन देना होगा। अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन दिनांक 10 मार्च 2025 सोमवार शाम 5:00 बजे किया जावेगा। इसी अनुसार मतदाताओं को मताधिकार प्राप्त होगा।

नवनिर्वाचित महापौर मीनल चौबे को प्लेसमेंट कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों ने दी हार्दिक शुभकामनाएं

रायपुर (आरएनएस)। आज रायपुर की नवनिर्वाचित महापौर मीनल चौबे से मिलकर प्लेसमेंट कर्मचारी कल्याण संघ के अध्यक्ष संजय एड़े सहित पदाधिकारियों ने बुके प्रदत्त करते हुए प्रथम नागरिक महापौर पद का कार्यभार ग्रहण करने पर हार्दिक शुभकामनायें दीं। अध्यक्ष ने संघ की प्रमुख मांगों के संबंध में अवगत कराते हुए प्लेसमेंट कर्मचारियों को नगर निगम से सीधा वेतन भुगतान करने, 4000 रु. श्रम सम्मान निधि प्रदान करने सहित अन्य प्रमुख मांगों के संबंध में महापौर से चर्चा की गई। जिस पर महापौर श्रीमती चौबे ने संघ की मांगों को पूरा करवाने के प्रति आश्चस्त किया। इस अवसर पर संघ के पदाधिकारी पवन चवर्गुवाल, देवेंद्र साहू, निरधारी साहू, मनीष तिवारी, गुलशन ताम्रकार, हेमंत फरिकार, रवि साहू, भोला साहू, ललित साहू, शबाना बेगम, नीलू शर्मा, रीता राव, शकुन हरपाल, संजना हरपाल, सावित्री उपस्थित थे।

विधायक के प्रयास से सड़कों को दुरुस्त करने 35 करोड़ की स्वीकृति

दुर्ग (विसं)। छत्तीसगढ़ विधानसभा में वित्तमंत्री ओपी चौधरी द्वारा पेश किये बजट में दुर्ग को कई राशि की बजट में दुर्ग शहर के 17 प्रमुख सड़क को दुरुस्त करने और धमधा रोड किनारे दोनों नाली बनाने 35 करोड़ राशि की बजट में स्वीकृति मिली है। अब दुर्ग विधानसभा क्षेत्र में सड़कों का जाल बिछेगा। विधायक गजेन्द्र यादव की पहल से इतने वृद्ध स्तर पर सड़क बनाने पहली बार शासन से राशि स्वीकृत हुई है। सड़क की दशा बेहतर होने से नागरिकों को आवागमन में सुविधा होगी। स्वीकृत बजट की राशि से विभिन्न सड़क का नवीनीकरण, सड़क चौड़ीकरण तथा कई स्थान पर पहुंच मार्ग बनाया जायेगा। दुर्ग विधानसभा क्षेत्र के नागरिकों की मांग के अनुरूप विधायक गजेन्द्र यादव ने विकास कार्य कराने बजट में स्वीकृति दिलाये है।

प्रदेश के अधिकांश जिला पंचायतों में बीजेपी का कब्जा

कल्पना योगेश तिवारी बनीं बेमेतरा जिला पंचायत अध्यक्ष

रायपुर (विश्व परिवार)। अधिकांश जिला पंचायतों में अध्यक्ष पद पर भाजपा समर्थित प्रत्याशियों की जीत हुई है। बेमेतरा, दुर्ग, कोरिया और कांकेर जिला पंचायत में भाजपा समर्थित अध्यक्ष निर्वाचित हो गए हैं। बेमेतरा से भाजपा की कल्पना योगेश तिवारी जिला पंचायत अध्यक्ष निर्वाचित घोषित हुई हैं।

दुर्ग में जिला पंचायत अध्यक्ष पद अनुसूचित जाति महिला वर्ग के लिए आरक्षित है। यहां भाजपा समर्थित सरस्वती बंजारे निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुई हैं। दुर्ग जिला पंचायत में भाजपा समर्थित प्रत्याशी ज्यदा संध्या में जीतकर आए थे। इससे परे बेमेतरा में भाजपा ने कल्पना योगेश तिवारी को जिला पंचायत अध्यक्ष प्रत्याशी घोषित किया था। कल्पना प्रदेश में सबसे ज्यादा वोटों से जिला पंचायत सदस्य का चुनाव जीतकर आई हैं। यहां कांग्रेस ने शशि गायकवाड़ को अध्यक्ष प्रत्याशी बनाया था। वोटिंग में कल्पना योगेश तिवारी को 10, और शशि को 4 वोट ही मिल सके। लंबे समय बाद बेमेतरा में भाजपा के जिला पंचायत पर कब्जे से पार्टी में खुशी की लहर है।

निगम परिसर के भीतर शाम 6 बजे के बाद शराब पीते पकड़े जाने पर निर्लंबित नही सीधे जाएगी नौकरी : महापौर श्रीमती अलका बाघमार

महापौर द्वारा निगम परिसर का शाम 6 बजे के बाद कभी भी कर सकती है औचक निरीक्षण

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम मोतीलाल वीरा सभागार में महापौर श्रीमती अलका बाघमार की अध्यक्षता में सोमवार शाम पाषंढी एवं नगर निगम के अधिकारी/ कर्मचारियों की बैठक के दौरान जहाँ-जहाँ पाइप लाइन लीकेज जैसी समस्याओं की तत्काल सुधार करने के निर्देश दिये स्वच्छता को लेकर पूरे 60 वार्डों में बेहतर साफ सफाई होनी चाहिए। सफाई व्यवस्था में लापरवाही कोताही बर्दाश्त नही होगी। महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने कहा नागरिको के द्वारा निगम में अपने कामो को लेकर आने पर उन्हें सही मार्गदर्शन करें एवं इधर उधर न भटकाए, नागरिको का सहयोग व उनसे सौहार्द पूर्ण संवाद करें।

रामनगर शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला का औचक निरीक्षण करने पहुंचे : आयुक्त



भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र के रामनगर शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला में आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय, जोन आयुक्त सुशी येशा लहरे को लेकर निरीक्षण करने पहुंचे। वहां जाकर शिक्षकों द्वारा पढ़ाये जा रहे विषय के बारे में जानकारी प्राप्त किये। बच्चों को किस प्रकार से पढ़ाया जा रहा है, उनका कोर्स

माध्यमिक शाला में बच्चो की

उपस्थिति कम होने पर आयुक्त ने उपस्थित शिक्षकों से चिंता व्यक्त की। कक्षा-3 में मात्र 16 बच्चे, कक्षा-4 में 11 बच्चे, कक्षा-5 में 9 बच्चे ही उपस्थित थे। आयुक्त पाण्डेय ने शिक्षकों से पूछा क्या आपके द्वारा बच्चो के माता पिता से संपर्क किया जा रहा है। कि बच्चे क्यों नहीं स्कूल आ रहे है। जबकि अब पांचवी बोर्ड परीक्षा शुरू होने वाली है। बच्चों का हाजरी रजिस्टर की भी जांच किये, बच्चों के अधिभावको से भी फोन से संपर्क किये। उन्हें अपने बच्चो को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किये।

शिक्षको का कहना था, कि माता/पिता बच्चों को स्कूल भेजने एवं पढ़ाई के बारे में ध्यान नहीं देते है। जोन आयुक्त येशा लहरे ने बच्चो को प्रोत्साहित करते हुए बताया कि हम भी शासकीय स्कूल में पढ़कर आज आपके जोन की जोन आयुक्त

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3) शंकर नगर पार्क टेकी के नीचे, रायपुर

रायपुर दिनांक : 05-03-2025

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 18649
वार्ड का नाम- 12-महाला गांधी वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR225A00159 जो कि निगम अधिलेख में श्री/श्रीमती ASHOK BAJAJ पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O LT. PESHUMAL BAJAJ के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती DEEPAK JASWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती S/O LATE SHRI GOPICHAND JASWANI ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्यानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अधिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री विवेकानन्द दुबे (जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

सांसद ने 211 दिव्यांगों एवं वरिष्ठजनों को वितरित किया सहायक सामग्री



बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जांजीगर- चाम्पा सांसद श्रीमती कमलेश जांगड़े बुधवार को जिला मुख्यालय बलौदाबाजार स्थित स्पोर्ट्स स्टेडियम के पास समाज कल्याण विभाग द्वारा आयोजित दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठजनों हेतु सामग्री वितरण कार्यक्रम में शामिल हुई। इस अवसर पर उन्होंने 211 दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठजनों को सहायक सामग्री तथा 2 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग प्रदान किये। कलेक्टर दीपक सोनी के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में दिव्यांगजनों को एडीप योजनान्तर्गत 98 एवं 62 वयोश्री योजनान्तर्गत सहायक सामग्री का वितरण किया गया। इसके साथ ही समाज कल्याण विभाग द्वारा 51 दिव्यांगजनों को मोटराईज्ड ट्राइसिकल, सामान्य ट्राइसिकल, बैसाखी, श्रवण यंत्र व्हील चैयर,

छड़ी वाकर, वयोश्री किट (कमर बेल्ट कम्बोर्ड) अन्य सहायक उपकरण वितरण किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सांसद श्रीमती जांगड़े ने कहा कि हमारी सरकार दिव्यांगजन एवं वरिष्ठजनों की हर संभव मदद कर रही है। सहायक सामग्री एवं सहायक उपकरण वितरण के लिए हर जिले में शिविर लगाये जा रहे हैं। केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के तहत दिव्यांगों एवं वरिष्ठजनों को लाभ दिलाया जा रहा है।

इस अवसर पर अपर कलेक्टर सुशी दीप्ति गोते, उप संचालक समाज कल्याण अरविन्द गेडाम सहित सभी विकासखण्डों के करारोपण अधिकारी, समाज शिक्षा संगठक, सचिवगण एवं विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

लेखा सह एमआईएस सहायक पद पर भर्ती, 20 मार्च तक आवेदन बलौदाबाजार। छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन 'विबेन' अंतर्गत जिला पंचायत बलौदाबाजार-भाटापारा में लेखा सह एम.आई.एस.सहायक के संविदा एक पद के लिए भर्ती हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये गए है। वांछित अर्हताधारी एवं इच्छुक अभ्यर्थियों से आवेदन पत्र मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत बलौदाबाजार-भाटापारा, जिला बलौदाबाजार-भाटापारा पिन कोड-493332 के पते पर स्पीड पोस्ट/रजिस्टर्ड पोस्ट के माध्यम से 20 मार्च 2025 तक आवेदन जमा कर सकते है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रायगभाठा, रायपुर Email ID - rmczone6@gmail.com	कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-6) आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रायगभाठा, रायपुर Email ID - rmczone6@gmail.com
पत्र क्र./18639/न.पा.नि./जोन क्र. 6/2025 रायपुर दिनांक : 05-03-2025	पत्र क्र./18637/न.पा.नि./जोन क्र. 6/2025 रायपुर दिनांक : 05-03-2025
इशितहार नामांतरण प्र.क्र. 18639 वार्ड का नाम- 59 - मोरेश्वर राव गढ़े वार्ड एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 59 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR653D00348 जो कि निगम अधिलेख में श्री/श्रीमती KAMLA BAI YADAV पिता/पति, श्री/श्रीमती के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती PAWAN YADAV पिता/पति श्री/श्रीमती LATE LAXMAN YADAV ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्यानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ DEATH CERTIFICATE / वंशानुक्रम/अन्य अधिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।	इशितहार नामांतरण प्र.क्र. 18637 वार्ड का नाम- 59 - मोरेश्वर राव गढ़े वार्ड एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 59 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR653D00116 जो कि निगम अधिलेख में श्री/श्रीमती PANCHO BAI SAHU पिता/पति, श्री/श्रीमती JOIDHA RAM SAHU के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती RAJ KUMAR SAHU पिता/पति श्री/श्रीमती LALA RAM SAHU ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्यानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ MALMA BIKRINAMI के अनुसार/अन्य अधिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
सूचना जारी करें (जोन कमिश्नर) जोन क्रं.- 6 नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)	सूचना जारी करें (जोन कमिश्नर) जोन क्रं.- 6 नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय संपदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574 Email ID: ecoghbzone03@gmail.com

आम सूचना //				
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा हितग्राहियों को लीज में भवन आवंटित है, उक्त भवन को फ्री- होल्ड के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है, फ्री-होल्ड संपर्णित निम्नानुसार किया जाना है:-				
क्र	आवंटी का नाम	पिता./पति का नाम	कालोनी का नाम	भवन क्रमांक
1	2	3	4	5
1.	श्री अनिरुध पाण्डेय	श्री योगेश चंद्र पाण्डेय	सेक्टर-27 नवा रायपुर अटल नगर	पीउए-673
2.	श्री योगेश चन्द्र पाण्डेय एवं श्री अनिरुध पाण्डेय	स्व.श्री अमा शंकर पाण्डेय / श्री योगेश चन्द्र पाण्डेय	- तदैव-	पीउबी-787
3.	श्री हरीश पाण्डेय	स्व.श्री ओ.आर. पाण्डेय	- तदैव-	पीउबी-789
4.	श्री मधुसूदन सिंह सिकरवार	श्री प्रताप सिंह सिकरवार	- तदैव-	एफ।बी-01/405
5.	श्री पुनउ राय साहू एवं श्रीमती भूखा बाई साहू	स्व.श्री भूखाय साहू / श्री पुनउ राय साहू	- तदैव-	ई.डब्ल्यू.एस. - I, I, ब्लॉक-46/003
6.	श्री पुनउ राय साहू एवं श्रीमती भूखा बाई साहू	स्व.श्री भूखाय साहू / श्री पुनउ राय साहू	- तदैव-	ई.डब्ल्यू.एस. - I, I, ब्लॉक-46/004
7.	श्रीमती विमिता साहू	श्री जितेन्द्र कुमार साहू	- तदैव-	ई.डब्ल्यू.एस. - II, ब्लॉक-46/006
8.	श्री-रोमी वोहरा	श्री रमेश कुमार वोहरा	- तदैव-	P2U - 469

अतः इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के अन्दर किसी भी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपति हो तो तथ्य दस्तावेज के साथ अधोस्ताक्षरकता के कार्यालय में कार्यालयीन दिवस में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात् कोई भी आपति स्वीकार नहीं होगी।

संपदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना नवा रायपुर, अटल नगर, जिला-रायपुर

संपादकीय महाकुंभ-संयोग अब 144 साल बाद ही आएगा

एकता का महायज्ञ संपन्न

प्रधानमंत्री परेन्द्र मोदी ने प्रयागराज में सप्तर हूए महाकुंभ कऱ युग परिवर्तन कऱ आहत बताया और विकसित भारत का संदेश बताया। उन्होंने महाकुंभ समायन कऱ तुलना गुलामि कऱ मानसिकता कऱ बेडियों कऱ तोड़कर आजादी से संस ले रहे राष्ट्र कऱ नवजागत चेतना से की। समायन कऱ एक दिन बाद मोदी ने ब्लाग में लिखा, महाकुंभ सप्तर हो गया। एकता का महायज्ञ सप्तर हो गया। भारत अब नई ऊर्जा कऱ साथ आगे बढ़ रहा है। यह युग परिवर्तन कर संकेत है। जो भारत कऱ लिए नया भविष्य लिखेगा। उस सरकार कऱ अनुसार 13 नववरी कऱ शुरू हूए महाकुंभ में 65 करोड़ लोगों ने संगम में डुबकी लागाई। उधर राज्य कऱ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विश्वी दलों कऱ नशाना लगाते हूए कहा, दुनिया में कहीं भी इतना विशाल समायन नहीं हूआ। स्वच्छता व स्वास्थ कर्मियों कऱ सम्मान में आयोजित कार्यक्रम कऱ संबोधित करके हूए कहा लूटपाट, अपहरण, छेड़छाड़ व दुष्कर्म कऱ ऐसी कोई घटना नहीं हुई, जो विरोधियों कऱ दूरबान या मास्कोस्कोप से देखने कऱ मिलती। इसमें कोई संदेह नहीं कि सरकार कऱ अनुमान से कहीं अधिक संख्या में लोग प्रयागराज पहुंचे। जितना जन सैलाब था उसकऱ अनुपात में अनुसुधियों आ समस्याओं का खड़ा न होना अपने आपमें बड़ा आश्चर्य है। हालांकि भगदड़ कऱ मौतों कऱ आंकड़े छिपाने और अपनों कऱ तलाश में भटकने वालों कऱ जानते-बूझते अदेखी कऱ गई। सीमित साधनों कऱ चलते स्थानीय नागरिकों कऱ रोजाना कऱ चीचों व नियमित कार्य/पढ़ाई व नौकरपेशा लोगों कऱ हुई दिक्कतों कऱ किसी ने फिक्र ही नहीं की। हालांकि इस विशाल आयोजन में उत्साहपूर्वक शामिल होने वाले श्रद्धालुओं ने कई-कई किलोमीटर पैदल चलने, ट्रैफिक जाम में फंसे रहने और पीने कऱ पानी व भोजन कऱ लेकर हुई अव्यवस्था पर भरपूर सहयोगात्मक भाव बनाये रखा।मोदी ने उसे समझा और उस पर माफी मांग कर अपना बड़प्पन भी दिखाया, जबकि योगी कऱ बातों से ऐसा नजर नहीं आता, परंतु सफाईकर्मियों कऱ प्रात्साहन राशि देने व उनकी तारीफ करके उन्होंने परंपरा से हटकर अपना अंदाज दिखाया। आस्था, विश्वास व उत्साह भरे इस आयोजन कऱ लिए सभी कऱ सराहना कऱ जानी चाहिए।हालांकि इस विशाल आयोजन में उत्साहपूर्वक शामिल होने वाले श्रद्धालुओं ने कई-कई किलोमीटर पैदल चलने, ट्रैफिक जाम में फंसे रहने और पीने कऱ पानी व भोजन कऱ लेकर हुई अव्यवस्था पर भरपूर सहयोगात्मक भाव बनाये रखा।

आलेख

समय और घटना किसी के बस में नहीं

हरिशंकर व्यास

इंदिरा गांधी ने असली कांग्रेस को पार्टी तोड़ कर खत्म किया था। वही नरेंद्र मोदी ने बिना कुछ किए ही भाजपा और संघ परिवार को अपने घर में डाला है। सत्ता एका सत्ता आश्रित बना दिया है। क्योंकि, दिल्ली में मुख्यमंत्री के नए चेहरे के खवाले भाजपा के कुल नए अर्थ पर भाजपा अब क्या है? दो, सिर्फ दो नेताओं के करिश्मे पर आश्रित पार्टी। एक 74 वर्षीय नरेंद्र मोदी और दूसरे 52 वर्षीय योगी आदित्यनाथ। दोनों का उम्र में 22 वर्ष का फर्क। ऐसे में नरेंद्र मोदी यदि 2034 तक प्रधानमंत्री रहते हैं (कोई अनहोनी नहीं, माराजी सरसाई 81 वर्ष की उम्र में प्रधानमंत्री बने थे और 28 महीने पद पर रह कर 84 वर्ष की उम्र में रिटायर हुए थे) तब वे 84 साल के होंगे और योगी आदित्यनाथ 64 वर्ष के। तब उनका विधायक योगी को उत्तराधिकार सुपुर्द करने का होगा। यदि मोदी को इतने लंबे समय तक राज करना है तो मेरा मानना है कि वे उत्तर प्रदेश और हिंदी भाषी भूकों के लिए योगी को लगातार मुख्यमंत्री बनाए रखेंगे। यह भारतीय राजनीति का नया कीर्तिमान होगा। साथ ही भारत के भविष्य का अकल्पनीय सिनेरियो भी क्योंकि मोदी के हिंदुत्व और योगी के हिंदुत्व के तीस-चालीस साल में भारत अंदरूनी तौर पर जो बनेगा, वह छुपा नहीं रहना है। संभवतया यह सिनेरियो नामुमकिन लग रहा हो, तब जरा नई भाजपा पर गौर करें? सन् 2019 के बाद से आरएसएस के सदस्यिकरण का प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा का चेहरा, चरित्र ही बदल डाला है। भारत की पार्टियों और आजाद भारत का इतिहास है कि केंद्र सरकार की सत्ता तभी संभव है जब राष्ट्रीय चेहरे की धुरी पर पार्टी का विकास हो। साथ ही क्षत्रपों की स्वयंभू ताकत पर पार्टी संगठित हो। जनसंघ-भाजपा के इतिहास में श्यामा प्रसाद, बलराज मधोक, वाजपेयी यदि धुरी थे तो उसकी पहली दिल्ली की सत्ता में लोकल नेताओं (पंजाबी तिकड़ी-महोत्रा, साहनी, खुराना) का योगदान था। अद्वल बिहारी वाजपेयी ने हिंदी प्रदेशों में गुंज थी तो साथ में भैरो सिंह शेखावत, शांता कुमार, मंगल सेन, माधवकांत त्रिपाठी, कैलाशपति मिश्र, कैलाश जोशी, केयुबहाई जगन्नाथ राव जोशी, येदियुरप्पा, मनोहर पार्रिकर, कल्याण सिंह, प्रमोद महाजन की जातीय-लोकल क्षत्रप राजनीति से भी जनसंघ-भाजपा की सत्ता सीढ़ियां बनी थी। संगठन के चेहरों में दीनदयाल उपाध्याय, नाराज देशमुख, सुंदर सिंह भंडारी, कुशाभाऊ ठाकरे, लालकृष्ण आडवाणी आदि से संगठन को गति थी लेकिन जनभावना का ग्राफ तो चेहरों से ही बनता था। वह सब क्या भाजपा में अब है? भाजपा में जन्ता से सरोकार के चेहरे कितने हैं? जरा गौर करें इन चेहरों पर- भूपेंद्र भाई पटेल (गुजरात उम्र 62 वर्ष), मोहन यादव (मध्य प्रदेश, उम्र 59), देवेन्द्र फडनवीस (महाराष्ट्र, उम्र 54), मोहनचरण मांझी (ओडिशा, उम्र 53), भजनलाल शर्मा (राजस्थान, उम्र 58), पुष्कर सिंह धामी (उत्तराखंड, उम्र 49) नाथ सिंह सैनी (हरियाणा, उम्र 55), प्रमोद सावंत (गोवा, उम्र 51) विष्णुदेव साय (छत्तीसगढ़, उम्र 60), रेखा गुप्ता (दिल्ली, उम्र 50) भाजपा के अब सत्तावाचन चेहरे हैं। बाकी में पेमा खंडू (अरुणाचल, उम्र 45) हिमंत बिस्वा सक्मा (असम, उम्र 56) और त्रिपुरा के मानिक शाह कांग्रेस से आयाति हैं। आखिर ये उत्तर प्रदेश के योगी आदित्यनाथ (उम्र 52 वर्ष) हैं, जिसके एक हिंदू आईकों के चेहरे के आगे सभी जीरो हैं। तब पहली बात नरेंद्र मोदी और प्रदेश मुख्यमंत्रियों की आयु व कद में इतना गैप है कि कोई दिल्ली में प्रधानमंत्री पद की कुर्सी की महत्वाकांक्षा पाल ही नहीं सकता। सभी नरेंद्र मोदी के द्वारा बनाए गए हैं। इन्हे प्रदेशों से स्थापित, पुराने चेहरों को हाथिए में डाल कर बनाया गया है तो जाहिर है सभी राज्यों में भाजपा का पूरा ढांचा दिल्ली की खड़ाक है। मोदी के इंजनों के पीछे, निरकार ड्राइवर्स के समर्थित इंजन हैं। सभी नरेंद्र मोदी पर आश्रित उन्हीं द्वारा, उन्हीं के लिए, उन्हीं को समर्पित चेहरे हैं। किसी का अपना कोई स्वतंत्र वजूद नहीं। ऐसे ही लामाग केंद्रिय के बिन्दन में स्थिति है। ऐसा भारत की राजनीति में पहले कभी नहीं हुआ। नेहरू, इंदिरा, वाजपेयी किसी के भी राज में नहीं। इसलिए यदि नरेंद्र मोदी अपना राज 2034 तक चलाए रखें तो कोई बाधा नहीं है। यह जलफहमी नहीं रखें कि यह नई राजनीति आरएसएस अनुसार है। जैसा मैंने ऊपर लिखा है, सन् 2019 से मुख्यमंत्रियों, सत्ता के केंद्रों का फैसला सिध और सिर्फ नरेंद्र मोदी की रणनीति से है।

विचार-पक्ष

रायपुर, गुरुवार 06 मार्च 2025

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

सोशल वर्क के न जाने किन्ते सिद्धांत पढ़ लिए। सब कुछ उपनिवेशवादी शासकों द्वारा सिखाए गए। उत्तर भारत, दक्षिण भारत, एसटी, एससी, मंगोल, द्राविड, न जाने किन्ती किन्ती बातें। भारत को तोड़ने वाली बातें। लेकिन भारत के लोगों का यह महा उत्सव तो खुद भारतीयों ने सजाया था। ऐसा उत्सव जहाँ सैन्टर कालीय आजा-जा रहे थे। मुझे आज भी भारतीय विश्वविद्यालयों के समझासूत्र और सोशल वर्क विभागों के तंबू तो महाकुंभ में सज गए होंगे क्योंकि 'कंस स्टडी' के लिए यह अवसर फिर कब मिलेगा, पर ऐसा नहीं हुआ। समाज का पर्व दो दिन पहले शिवरात्रि के दिन सभा हो गया। कुंभ पर्व तो आगे भी आते रहेंगे लेकिन ग्रह नक्षत्रों का इस प्रकार का संयोग अब 144 साल बाद ही आएगा। जितने श्रद्धालु इस कुंभ के अवसर पर संयोग में स्नान करने के लिए प्रयागराज आए, उन्होंने किसी भी जमावड़े में सख्या के हिसाब से विश्व के सब नृ-पुराणे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। इस महाकुंभ में एक अनुमान के अनुसार 65 करोड़ श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई। मैं भीड़ से प्रायः डरता हूं। इसलिए रेलगाड़ी में टिकट बुक करावा करी भी यात्रा से बचना रहा। लेकिन कानाडा से बैटा तपन पौन करता रहा कि कुंभ का इस प्रकार का संयोग अब न आपके जीवन काल में आएगा और न ही हमारे जीवन काल में आएगा। इसलिए प्रयागराज जाना अनिवार्य ही है। वैसे छोटा भाई विजय कुमार तो अमेरिका से कुंभ स्नान के लिए पहुंच गया था। एक चार्टर्ड रेलगाड़ी प्रयागराज जा रही थी, छोटे भाई देवदत्त ने उसमें सीटें आरक्षित करवा ली थीं। लेकिन गाड़ी में अत्यवस्था देखकर वह अपने देहे समेत शिव वाणी का नाम लेकर चंडीगढ़ से प्रयागराज जाने वाली बस में सवार हो लिया। बस को 18 घंटे में प्रयागराज पहुंचना था, लेकिन उसने यह काम 29 घंटों में किया। वहां जाकर किन्ता पैदल चलना पड़ा, इसका हिसाब न भी लगाएँ तो वापसी की बस दो जगह खराब हो गई तो लिफ्ट ले-लेकर वापस आना पड़ा। भानजा अमित कार में ही प्रयागराज पहुंच गया था। उसके बावजूद उसे लगभग बीस किलोमीटर पैदल चलना पड़ा। ऐसी साहसपूर्ण कहानियाँ ने मुझे हौसला दिया। वैसे प्रयागराज में जाने को लेकर तपन की अम्मा का उल्लाह कभी भी



मदम नहीं हुआ था। उधर जैसे-जैसे कुंभ को लेकर देश में उसाह और श्रद्धा का अवन आया हुआ था, वैसे-वैसे विपक्षी दलों में निराशा घर करती जा रही थी। लेकिन महाराज से जान्ते घर पता चलता था कि यह निराशा कुंभ को लेकर नहीं थी। कुंभ में आसना ब्रह्मरथ थी और बिना राजनीतिक भेदभाव से सभी संगम पर जा रहे थे, लेकिन दिल्ली, लखनऊ में अपनी राजनीतिक निराशा को जरूर व्यक्त कर रहे थे। ममता बनर्जी तो इतना घबरा गईं कि कुंभ का नाम भूल कर उसे मृत्यु कुंभ ही कहने लगीं। लालू यादव भी विष्णु संहसना पड़ते-पड़ते बड़बड़ाने लगे कुंभ कब बास है। यादवों ने जाकर समझाया क्यों महाराज बुढ़ापे में अंट-संट बतिया रहे हैं। बीमारी दिमारी के चतते आप का भीड़भाड़ में जाना ठीक नहीं है, लेकिन बिरादरी को तो बदनाम मत कीजिए। अखिलेश यादव संगम में नहाते भी जा रहे थे और चर्चिया भी रहे थे, लेकिन चच्चा को लेकर नहीं गए त्रिवेणी घाट। राजनीति जो न कराए सो थोड़ा। सारा भारत प्रयागराज की ओर चला हुआ था और सारा विपक्षी संगम स्नान भी कर रहा था और स्नान के बाद गिरिया भी रहा था। इस प्रकार के वातावरण में हिंदुस्तान प्रयागराज की तैयारी ठानी। प्रयागराज में हिंदुस्तान समानाचार न्यूज एजेंसी के व्यूरो चीफ राजेश तिवारी पहले से ही मोर्चा संभाले थे। मैं भी कभी हिंदुस्तान समानाचार के निदेशक मंडल में रहा था। बात चाहे पुरानी थी, लेकिन थोड़ा बहुत लिहाज अब भी ज़रूरी हुआ था। इसीलिए पहले वहाँ बात करना सच्चा समझा। तिवारी जी को फोन मिलाया और मेरा

सीमाभ्य था कि उन्होंने उठा भी लिया। मैंने प्रयागराज आने की अपनी इच्छा जाहिर की तो उन्होंने सलाह दी कि बारह ओरो तेरह को यहाँ आने से बच सकते हैं तो ठीक रहेगा, क्योंकि इन दिनों भीड़ बहुत ज्यादा होगी। लेकिन मेरी असली जिज्ञासा यह खबरा निकालने की थी कि कहीं एक दिन रहने की व्यवस्था क्या संभव है। इसका उत्तर तिवारी जी ने सकारात्मक दिया। उनका कहना था कि सरकार ने नेशनल मीडिया के लिए एक बड़ा आवास बनाया हुआ था, जिसमें अनेकों सैट ठहरने के लिए उपलब्ध थे। केवल उपलब्ध ही नहीं, बल्कि निःशुल्क थे। मेरे लिए उस दिन की यही हैडलाइन थी। चौदह फरवरी को चंडीगढ़ से पहली फ्लाईअट प्रयागराज के लिए पकड़ी। राजेश तिवारी जी का भाई वहाँ आया हुआ था। वहाँ से निकले तो उत्साह में थे, लेकिन जैसे जैसे शहर के नजदीक पहुँचे तो मामला गिगड़ गया। सारे रास्ते जाम थे। पैदल चलने वालों का हुजुम था। दूरा-दूरवर्तियाँ। बच्चे-बूढ़े। सिर पर गदरियाँ। एक-दूसरा का हाथ पकड़े हुए। हर हर महादेव। कुछ-कुछ चले तो दूर-दूर से पैदल ही आ रहे थे। जिनकी बस या ट्रक जहाँ रुक गया था रोक दिया गया, वहाँ से पैदल चले आ रहे थे। कौन कितने किलोमीटर से सचला रहा था, यह जान लेना कठिन था। लेकिन हैराणी की बात कि किसी के चेहरे पर थकान नहीं बल्कि उत्साहाभास छल्ला था। हर हर महादेव। तिवारी जी समझ गए कि अब इस जनसमुह से पार पाना मुश्किल है। उन्होंने अपनी गाड़ी जमशेद के अंदर के रास्तों पर मोड़ ली। कभी एक रास्ता कभी दूसरा। कोई बंद कोई खुला। लाभगर्ष दो

जैसे हम एक ऐसे स्थान पर पहुँच गए जहाँ से आगे जाना मुश्किल था। वहाँ से पाँव पाँव चले। लेकिन नज्दालुओं का अब तक महासागर बन गया था। श्रद्धालु ही मीडिया के लिए बनाए गए कार्यालय थे। शुरु था कि हिंदुस्तान समाचार का कार्यालय सबसे नजदीक था। वहाँ पहुँचकर तसल्ली हुई। राजेश तिवारी बर्लक थे। उन्होंने पांच पिलाई। कुछ खाने के लिए मीठा भी। 'कुछ मीठा हो जाए' वाला मीठा नहीं बल्कि दूध से बना मीठा जिसे पंजाब में खोआ कहा जाता है। उसके बाद निकले नहाने के लिए। राजेश तिवारी जी जो पाँव ही चले। अब हम सब जन्म-सैलाब का हिस्सा थे। बड़ी उम्र के लोग। छोटे बच्चे पाँच-छह साल तक के। एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए। कुछ लोगों ने रस्सी भी पकड़ रखी थी। कुछ भी हो जाए रस्सी को नहीं छोड़ना है। बड़ी उम्र के जो लोग चल नहीं सकते थे उनके परिवार वाले उनको किसी रेहड़ीनुमा गाड़ी पर लिटा कर खींच रहे थे। सोंपम पर स्रान हर हालत में करना है। यह अवसर अब फिर कहाँ मिलेगा। इतना पढ़ते-सुनते रहे थे कि भारत में झूठकहाँ है। एक जाति के लोग दूसरी जाति के व्यक्ति के हाथ का छुआ नहीं खाते। यह सबसे पढ़ते-पढ़ते आखें पथरा गई। समाजशास्त्र के अध्यापक इसे पढ़ाते-पढ़ाते खुद भी पक गए। सोशल वर्क के न जाने कितने सिद्धांत पड़ लिए। सब कुछ उनविशेवादी शासकों द्वारा सिद्धाए गए। उत्तर भारत, दक्षिण भारत, एसटी, एससी, मंगोल, द्राविड, न जाने कितनी किन्ती बातों। भारत को तोड़ने वाली बातों। लेकिन भारत के लोगों का यह महा उत्सव तो खुद भारतीयों ने सजाया था। ऐसा उत्सव जहाँ पैंसठ करोड़ भारतीय आ-जा रहे थे। मुझे आशा थी भारतीय विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र और सोशल वर्क के विभागों के तबू तो महाकुंभ में सज गए होंगे क्योंकि 'केस स्टडी' के लिए यह अवसर फिर कम मिलेगा। भेद तलाशने वाले अकादमीशियन भारत के 'अभेद' होने का दृश्य भी देख लेंगे। केस स्टडी से अपने निष्कर्षों में भी शायद कुछ परिवर्तन करेंगे। लेकिन इस 'भारत उत्सव' में भारत तो था लेकिन भारत को सझ करने का दावा करने वाले गायब थे। शायद वे भारत का सामना करने का साहस नहीं जुटा पा रहे होंगे। हम सँग पर पहुँच गए थे। यह महाकुंभ ऐसा महाकुंभ है, जहाँ आधे से अधिक भारतीयों ने पवित्र स्नान किया।

नशा: सामाजिक-पारिवारिक जिम्मेदारी...

जगदीश बाली

संभव है कानून के रखवाले कोताही बरतते हों, पर क्या महज सरकार, पुलिस व कानून बरग जैन-सर्वयोग के नशे से हमारे समाज को निजाद दे सकते हैं? यहां माता-पिता, अध्यापकों और कुल मिला कर समाज का दायित्व महत्वपूर्ण है। विभिन्न प्रतियोगिताओं के दौर में नशे से सेवन पर कड़ी नजर रखने को आवश्यकता है जैसे चैंटी चाट-चाट कर चीनी को चाट कर जाती हैं, वैसे ही विद्यु भी चाट-चाट कर समाज को चर चर रह रहा है। और उभर नशा करने वाले हैं कि मानते ही नहीं। लगाता है जैसे व अकबर इलाहाबादी के इस शेर के मुरीद बन बैठें हैं। 'हंगामा है ब्यूँ बरपा थोड़ी सी जो पी ली है, डका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है।' वे नहीं मानना चाहते कि नशे की तलब ही ऐसी है कि आज का युद्ध पर नशा कब खरबान बन कर उनका सब कुछ लील लेगा। खबरे खुलासा करती हैं कि हिमाचल में कोई तहसील कल्याण अधिकारी, कोई डॉक्टर, कोई वकील, कोई पुलिस, कोई पटवारी, कोई नेता, कोई इंजीनियर, कोई अध्यापक चिट्ठे के कारोबार में सलिल हैं। न पुष्प बचा नहीं, न महिला, न युवक बचा नहीं, न युवती। तो फिर बचा कौन है? बचा कोई नहीं है। जब बचा कोई नहीं है, तो किस पर भरोसा करें, किस पर संदेह। किसे पकड़ें, किसे छोड़ें? नशे से प्रभाव व त्रस्त समाज को जो स्थिति है वो पिस्तु 'उड़ता एंका बच' के उस संवाद की याद दिलाती है जिसमें एक चाय

वाला कहता है, 'अब चाय कौन पीता है' पड़े होंगे खंडहरों में नशेड़ीज' जहाँ मां-बाप एक-एक पैसा जोड़ कर अपने बच्चों के भविष्य के सपने देखते हैं, वहीं नशे में डूबे हुए ये बच्चे नशे की एक-एक बुंद से, ड्राग की एक-एक सांस से, खैनी या जर्द की एक-एक चुटकी से उन सपनों की ध्वस्त करने में लगे हैं। सूरत-ए-हाल बयां करती है कि नशा समाज में बेवैतहा कालिया और मातम पसार रहा है। नशे से जुड़ी घटनाओं की जो दृश्यावली हमारे सामने है, वो रोंगटे खड़े कर देती है। इस पस-मंजर में झुंड कैसे साबब का शेर भोजौ जान पचता है- 'ये वाकिआ मिरी आंखों के सामने का है, शराब नचा रहे थी गिलास दे रहे।' बात केवल चिट्ठी की नहीं है, बल्कि समाज में व्याप्त हर नादक व्यस्र की है, जिससे गुजरते हुए नशेड़ी चिट्ठी तक पहुँचता है। आज से 12 वर्ष पहले स्टार प्लस टीवी चैनल पर 'सत्यमेव जयते' कार्यक्रम में देश के महशूर विजिनेस पत्रकार विजय सिन्हा द्वारा दिए गए इंटरव्यू को जरूर देखिए। इसमें वे बताते हैं कैसे शराब की लत ने उन्हें बर्बाद कर दिया था और उनके पिता जी ने उन्हें मर्त में ये तकदिर दिया था, 'तुम्हें पुत्र के रूप में पाना एक अभिशाप है।' हालाँकि बाद में पता में आम जीवन में लौट आए, परंतु कम लोग ही नशे के गत से लौट पाते हैं। उनकी आप-बीती बताती है कि नशेड़ी क्या-क्या करता है और नशा उससे क्या-क्या करता है। आज हर माता-पिता की पहली चिंता यह है कि उनकी संतान कहीं नशे की शिकार न हो जाए। नशा

माता-पिता, समाज, सरकार व कानून व्यवस्था के लिए शूल बना हुआ है। सवाल यह भी है कि आज इतनी भयावह स्थिति तक हम कैसे पहुँचे। यह कहना तो आसान है कि कानून या सरकार जिम्मेदार है, परंतु सनद रहे कि समाज के सहयोग के बगैर कोई भी बुराई न मिल सकती है, न पपप सकती है। यदि उठे दिमाग व गंभीरता से सोचा जाए, तो यह बात समाने आएगी कि नशे के लिए समाज व परिवार भी जिम्मेदार हैं। जब समाज किसी विकृति व व्यसन को आम समझकर नजरअंदाज कर देता है या संरक्षण देता है, तो उस समाज का उस विकृति व व्यसन से ज़रत-ग्रस्त होना अवश्यभावी है। नशाखोरी के मामले में भी ऐसा ही हुआ और स्थिति आज यवके सामने है। अमूमन ऐसा होता है कि घर का बड़ा किसी बच्चे को बीड़ी-सिगरेट में खरीने दुकान भेजता है। इस प्रक्रिया में बच्चे के मन में इन धूप-दंडिकाओं के चमत्कार के प्रति उत्कण्ठता होना स्वाभाविक है। और जब बीड़ी और सिगरेट के कश खींचता हुआ घर का कोई बड़ा बच्चे को बीड़ी-सिगरेट न पीने की नसीहत देता है, तो समझा जा सकता है कि बच्चा इनके कुप्रभाव को कैसे लेता है। धुआँ उलाली इन दंडिकाओं के प्रति बच्चे के मन में उपजी उत्कण्ठा का शमन बहुतायत तब तक नहीं होता, जब तक वह खुद इन दंडिकाओं से दो-चार कश स्वयंसे नहीं खींच लेता। फिर यह कार्यकर्म नियमित तौर पर चल पड़ता है। दो-चार कश से पूरी दंडिका, दंडिका से पूरी डडिबा या बंडल का सिलसिला निकल पड़ता है। पूरी डडिबा या बंडल का सिलसिला निकल पड़ता है।

बोड़ी-सिगरेट से होते हुए सफ़र तंबाकू, खैनी, चरस और बोलत तक जाता है। बोलत से निकलकर सफ़र का अगला व सबसे नूतन पड़ाव चिन्ना आता है। शार्दयों या अन्य समारोहों में सार्वजनिक रूप से मंदिरारपान करने वालों की काफ़ी आवभगत होती है। नशा न करने वालों को कुछ मिले न मिले, कोई बात नहीं, परंतु पढ़ाव पीने वालों के लिए अपौरुष-ए-ख़ास मांस, चटपटा चना, सलाद, पकौड़ा इत्यादि परमांसा जाता है। जाहिर है ऐसा दृश्य देख हमारे बच्चे नशे को अद्भुत चीज समझ कर इस ओर आकृष्ट हो जाते हैं। परिणामस्वरूप जिज्ञासावश लिया गया नशे का पहला चूट बात का जल में बदल जाता है। चिंता का विषय यह कि ड्रग़ का महत महाविद्यालयों से होकर स्कूलों में पढ़ रहे मासूमों की राों तक पहुंच रहा है। तो अब क्या करें, रारता क्या है, चिट्ठे से बचने का पैराम क्या है, पयाम क्या है ? स्कूलों में पढ़ते मासूमों को नशे से नहीं बचाया गया, तो हमारे समाज का स्वरूप भयावह होगा। नशे में संलिस छात्रों की कार्डसिलिंग होनी चाहिए और अगर वे नहीं सुधरते तो उन्हें किसी डिपॉजिटक्शन के रूप में भेज देना चाहिए, अन्यथा वे अन्य बच्चों को भी इस गति में धकेल देंगे। संभव है कानून के रखवाले कोताही बरतते हों, पर क्या महज सरकार, पुलिस व कानून बगैर जन-सहयोग के नशे से हमारे समाज को निजात दे सकते हैं ? यहां माता-पिता, अध्यापकों और कुल मिला कर समाज का दायित्व महत्वपूर्ण है।

कौन धोएगा चिट्ठे के दाग ?

आशीष बहल

यदि चिट्ठे के सौदागर जो इसका समय प
कारोबार करते हैं, अगर वो खत्म होंगे तो 2 सालों
चिट्ठा हमारे घर तक नहीं पहुंच सकत। समस्या
। आज हमारे तो शहर, गांव के भोले-भाले यहाँ है कि
लोग भी इसका प्रयोग कर रहे हैं। स्कूल- नहीं कर
-कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलते ही गांव के
। इन्हें और प्रभावी करना होगा क्योंकि आ रहा
चिट्ठे के तर्कों के सबसे बड़े डरावने स्कूल है और
और कॉलेज के बच्चे नस रहे हैं। फिर इसमें ग्राहक भ
न लड़कें अछूते हैं, न लड़कियाँ। आइए सब रहा है।
मिलकर अपनी भूमिका का निर्वहन करें। मौका त
आज आपको पता चलता है कि आपके व्यापार
पड़ोस का कोई भी व्यक्ति चिट्ठे का शिकार नहीं, वो
है तो उसे बचाने का प्रण लीजिए, उसके किसी भ
माता-पिता को समय रहते आगाह कीजिए, यहाँ का
क्योंकि समाज का बेटा या बेटी एक के बड़ने ल
नहीं होते, सारे समाज के होते हैं 'चिट्ठा'- और 20
हिमाचल में बस यही सबसे बड़ा रहा है।
पीढ़ाद्वयक शब्द बना हुआ है। चिट्ठा हमारे बड़ रही
इस सूर्यदिमाचल को इस कदम काला किए कर कोई
का रहा है कि हमने इसकी कल्पना भी नहीं चिंतित
की थी। चिट्ठा आज युवा पीढ़ी के नस-नस सुनिश्चि
में घुसता जा रहा है। आज हर माता-पिता बिगुन
इस बात को लेकर चिंतित है कि कहीं हैं। माँ-
उनका बच्चा भी इस लत में न पँस जाय। फिर तो
आखिर यह चिट्ठा है क्या? एक ऐसा नशा पड़तो से
की लत



रा रहे हैं। वो चिट्ठे के जहर का रहे हैं। जिसे इसकी लत लग जहर को खरीदे के लिए तब तक जाने को तैयार बैठा है। है कि हिमाचल में अपराध भी रहे। सब अब 1 से 2, 2 से 20 हजारों लोगों में कारोबार बढ़ लाखों लोगों में इसकी खपत आज समाज, परिवार, सरकार सब भयाङ्क बीमारी को लेकर अब उस परिवार की व्यथा का बैठा या बेटी इसकी लत में में को या तो पता नहीं चलता या ना किसी को शोशित करते हैं। आज ना किसी न किसी रूप से चिट्ठे या किसी न किसी तरह उससे जुड़े जा रहे हैं। भूमिका तय होती बहुत से ऐसे उदाहरण अपनी सख्त और माफिया की कम्मर अन्ववाद भी देखें व समाज के यही देखें नजर आए हैं। नरक समाज में प्रचलित कुछ और रूप है। समाज का अहित न यह रूप चिट्ठा एक तरह फैलना शुरू है आंकड़ों की बात क के बाद चिट्ठा का 5 सालों में एनडीपी



सं सबसे महत्वपूर्ण पुलिस विभाग की। हैं जहां पुलिस ने कार्यशैली से नशा डी है, परंतु कहीं मिलते हैं। कई जगह नशे के संरक्षक भी तो कॉपी समय से लगभग केस फाइल किए गए। 12 चिट्ठे से जुड़े थे और इन मामलों में साल 2024 में ही चिट्ठे से जुड़े अधिक केस रजिस्टर हुए जिसे 1400 लोग सॉलिस पाए गए। ये हैं जो सामने आए। इससे कई मामले ऐसे हैं जो हाथ ही नहीं

परंतु चिट्ठा नशे का नहीं कि नशों से उड़ा रहा, परंतु नशे का यानक महामारी की चपेट में चला गया है। अगर कुछ हिमाचल में 2016 फैल गया है। पिछले के तहत 8400 के इसमें से बहुत से अपराधी पंजाब से हैं। ऐसा कई बार देख हिमाचल में चिट्ठा पड़ोसी रा मुहैया करवाया जा रहा है। उड़ड़ करवाया जा रहा है। बान अब उखड़ा हिमाचल बन चुका है। हर राज चिट्ठा के मन घुसने वाले युवाओं की खबरें मन व्यथित हो उठता है। चिट्ठा



हम सबको एक मुहिम बना कर एक साथ खड़े होना होगा। अपने गांव को अपने शहर से एक सड़महारी से बचाना होगा। ऐसा नहीं है कि जो चिट्ठी की लत में पंस गया, उसे बाहर नहीं निकाला जा सकता। हिमाचल में ऐसे युवाओं के लिए अस्पताल में स्पेशल देखभाल की जाती है। उनका मनोवैज्ञानिक तरीके से इलाज किया जाता है और कई युवा चिट्ठी को त्याग कर फिर से नई जिंदगी की शुरुआत करने लगे हैं। इसलिए इस चिट्ठी के चंगुल में पसे लोगों से दूरी नहीं बनानी है, दूर करना है चिट्ठी को इन सब युवाओं से। जो भी इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं, उन्हें सही राह में लाने का काम हमें करना होगा। इसके लिए जरूरी है कि पुलिस विभाग में शीश एल टीसी गठित की जाए क्योंकि पुलिस ही एक ऐसा कड़ी है जो चिट्ठी माफिया की कमर तोड़ सकती है। यदि चिट्ठी के सौदागर जो इसका कारोबार करते हैं, अगर वो खत्म होंगे तो चिट्ठी हमारे घर तक नहीं पहुंच सकता। अगर शहर तो शहर, गांव के भोले-भाले लोग भी इसका प्रयोग कर रहे हैं। स्कूल-कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलते ही हैं। इन्हें और प्रभावित करना होगा क्योंकि चिट्ठी के तस्करों के सबसे बड़े टारगेट स्कूल और कॉलेज के बच्चे बन रहे हैं। फिर इसमें न लड़के अहूत हैं, न लड़कियां।

संक्षिप्त समाचार

गायत्री नगर में मनाया गया भगवान मल्लिनाथ जी का मोक्ष कल्याणक



जयपुर (विश्व परिवार)। दिगंबर जैन मंदिर प्रबंध समिति गायत्री नगर, महारानी फार्म के तत्वावधान में मंदिर जी में फागुन सुदी पंचमी 4 मार्च 2025 को प्रातः 7 बजे से जैन धर्म के 19 वें तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ जी का मोक्ष कल्याणक धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर प्रातः श्री जी के प्रथम अभिषेक, शांति धारा, निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य प्रदीप-मीता पहाड़िया परिवार ईटानगर वालों को प्राप्त हुआ तत्पश्चात निर्वाण कांड बोलकर भगवान मल्लिनाथ जी का सामूहिक निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इस अवसर पर मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा, उपाध्यक्ष अरुण शाह, मंत्री राजेश शाह, जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, एडवोकेट विमल जैन, दीपेश छाबड़ा, बसंत बाकलीवाल, संजय ठेलिया, रघु विहार विकास समिति के अध्यक्ष सुरेश जैन, दिगंबर जैन सोशल ग्रुप भारती की अध्यक्षता प्रमिला शाह आदिनाथ महिला मंडल की प्रचार मंत्री अनिता बड़जात्या आदि गणमान्य महानुभावों के साथ अनेकों श्रेष्ठि, पुरुष, महिला उपस्थित थे जिन्होंने सामूहिक निर्वाण लाडू चढ़ाकर सामूहिक आरती की। समस्त मांगलिक क्रियाएं विधानाचार्य पं. अजीत शास्त्री द्वारा संपन्न कराई गई। सभा का कुशल संचालक अरुण शाह द्वारा किया गया। -उदयभान जैन

शास्त्रिपरिषद् के प्रतिनिधि दल ने निर्यापक मुनिश्री योगसागर जी के दर्शन किए



सागर (विश्व परिवार)। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य एवं आचार्यश्री सत्यसागरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती निर्यापक मुनिश्री 108 योगसागरजी महाराज संसंध के दर्शन करने के लिए अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रिपरिषद् का प्रतिनिधि दल अंकुर कॉलोनी सागर पहुँचा। इस दल में विद्वत्श्री राजकुमार जैन शास्त्री, विद्वत्श्री परम जैन दीवान, विद्वत्श्री उदयचन्द जैन शास्त्री, डॉ. हरिश्चन्द्र जैन, डॉ. शोभालाल जैन, विद्वत्श्री अनिल जैन शास्त्री और डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ संयुक्तमंत्री अभादि जैन शास्त्रि परिषद् पहुँचे। मुनिश्री से विविध विषयों पर चर्चा हुई। मुनिश्री ने वर्तमान में, आचार्यश्री के जीवन के अनेक प्रसंग बताए। उनके द्वारा की गई वाचनाओं से संबंधित संस्मरण सुनाए। शास्त्रि परिषद् के कार्यो की प्रशंसा की और उन्हें सदा उन्नति करने के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। मुनिश्री ने कहा ङ्क धर्म की प्रभावना का साधन केवल टीवी नहीं है अपितु उत्तम आचरण और आडम्बर से दूर हो धर्म की प्रभावना का कारण है। ज्ञानी वही है जो राग-द्वेष से परे है, जो हिताहित को जानता है न कि शास्त्रों का जानने वाला ज्ञानी है। मुनिश्री को शास्त्रि परिषद् की शोध पत्रिका जैन सिद्धान्त उनके करकमलों में भेंट की। इसके पश्चात् प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन का विधान पत्र भी मुनिश्री के करकमलों में प्रदान किया। अनेक सैद्धान्तिक चर्चाएं पूज्यश्री से हुई। सामाजिक मुद्दों पर भी मुनिश्री का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। 9 मार्च 2025 को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की शिक्षाएँ इस विषय पर एक विद्वत्संगोष्ठी के आयोजन की भी रूपरेखा तैयार की गई है।

एनआईटी रायपुर के छात्रों को मिला गूगल और सेल्स्फोर्स से ग्री प्लेसमेंट ऑफर, गुगल ने 58 लाख वार्षिक सीटीसी का दिया ऑफर



रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर के छात्रों ने प्लेसमेंट के क्षेत्र में नई उपलब्धियाँ हासिल की है। संस्थान के अंतिम वर्ष के छात्र दिव्यांश पांडे (कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग) और निरिज चंद्रा (इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी) को गूगल से ग्री-प्लेसमेंट ऑफर प्राप्त हुआ है, जो उनकी उत्कृष्ट क्षमताओं और समर्पण का परिणाम है। लखनऊ में जन्मे विराज चंद्रा ने अपने दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत से सफलता की नई मिसाल कायम की है। छात्र ने बचपन से ही पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और विज्ञान विषय का चयन करते हुए आईआईटी में दाखिले का सपना देखा। छात्र ने अपनी मेहनत और लगन के बल पर एनआईटी रायपुर में आईटी शाखा में प्रवेश प्राप्त किया। छात्र ने पहले दिन से ही कंप्यूटर प्रोग्रामिंग (सीपी) और डेवलपमेंट में खुद को समर्पित कर दिया। गिटहब, प्रोजेक्ट्स और रियल्लूमे को बेहतर बनाने के लिए दिन-रात मेहनत की। अपनी लगन मेहनत के दम पर उन्होंने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। विराज को गूगल में सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट इंजीनियर (एसडीई) के पद पर नियुक्ति का प्रस्ताव मिला है। विराज को इस पद के लिए 58 लाख रुपये प्रति वर्ष का ग्री प्लेसमेंट ऑफर प्राप्त हुआ है। यह उपलब्धि उनके कठिन परिश्रम और कुशलता का परिणाम है। एनआईटी रायपुर में प्रवेश लेने के बाद, विराज ने कॉलेज के म्यूजिक और कोडिंग क्लब का हिस्सा बनकर अपनी रुचियों को विकसित किया और अपना समय खुद को अपग्रेड करने में लगाया। विराज ने अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कई बार अपनी व्यक्तित्व इच्छाओं का त्याग किया। विराज का कहना है कि यह अनुभव उनके लिए एक सीखने का अवसर था, जिसने उन्हें अनुशासन और अपने काम के प्रति समान करना सिखाया। विराज ने अपनी सफलता का श्रेय अपने दृढ़ संकल्प और लगातार मेहनत को दिया है। उन्होंने बताया कि किसी विशेष संसाधन या टूल पर निर्भर रहने के बजाय, उन्होंने जो सही और उपयुक्त लागू, उसे एक्सप्लोर किया। विराज ने कहा कि संसाधन और उपकरण सिर्फ एक माध्यम हैं। मैंने जो कुछ भी पढ़ा, उसे समझने और आत्मसात करने की कोशिश की। उनके मुताबिक, सफलता का असली मंत्र है हर दिन मेहनत करने रहना।

मानव जीवन, निर्ग्रंथ गुरु, अच्छा कुल बहुत ही बड़े पुण्य से मिलता है : मुनि श्री समतासागर जी महाराज

दुर्ग (विश्व परिवार)। हम और आप सभी को मनुष्य जीवन ही नहीं मिला बल्कि अच्छे बुरे का भेद करने के लिये अच्छी बुद्धि मिली जिसे पाकर हम हम और आप सभी धर्म ध्यान कर रहे हैं, अपने हित अहित का निर्णय करने के लिये सक्षम हैं। उपरोक्त उद्गार निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर महाराज ने प्रातः कालीन प्रवचन सभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने निगोद से लेकर मनुष्य जीवन तक की इस यात्रा का वर्णन सुनाते हुये कहा कि हजारों वर्षों तक तो निगोद में पड़े रहे जैसे तैसे निगोद से निकले और एक इंद्रिय हुये जहां पर मात्र स्पर्श इंद्रिय थी, तत्पश्चात दो इंद्रिय हुये और जिच्चा मिली तथा अंदर की आबाज बाहर निकली फिर तीन इंद्रिय बने तो हमें सूंघने की शक्ती के रूप में नासिका मिल गयी, और फिर चार इंद्रिय बने तो सुनने के लिये कान मिल गये और पंच इंद्रिय बने तो देखने के लिये आंख मिल गयी और जब संज्ञी पंचेन्द्रिय बने तो हमें अच्छे बुरे की पहचान हो गई



उनको अपनी मृत्यु का भान हुआ तो सीधे दीक्षा लेकर बन को निकल पड़े और जंगल भव की बैरी स्थाली उनका भक्षण करती रही, लेकिन वह अपनी तपस्या से च्युत नही हुये और उसी भव से मोक्ष को प्राप्त रहे वह इतने नाजुक थे कि उनको सरसों का दाना भी चुभता था, लेकिन जैसे ही

के साथ किया जाता है, मानव जीवन, निर्ग्रंथ गुरु, अच्छा कुल बहुत ही बड़े पुण्य से मिलता है आप लोगों का यह पुण्य ही है जो आपको निरंतर मुनिसंध और आर्यिकासंध के दर्शन और उनको आहार कराने का सौभाग्य मिल रहा है, अपने दृव्य और मन की शक्ति का उपयोग करो धर्मात्मा ही इसका सदुपयोग करता है।

इस अवसर पर मुनि श्री पवित्र सागर महाराज ने सम्बोधित करते हुये भगवान का अभिषेक विधी बताई इस अवसर पर ऐलक भव की बैरी स्थाली उनका भक्षण करती सहित क्षु, संयम सागर मंचासीन थे। राष्ट्रीय प्रवका आविनाश जैन विद्यावाणी एवं प्रचार प्रमुख मनीष जैन बड़जात्या ने बताया दि. जैन बड़ा मंदिर में मान स्तंभ के भगवान का

अभिषेक एवं शांतिधारा मुनि श्री समतासागर महाराज के मुखारविंद से संपन्न हुई। प्रवका अविनाश जैन ने बताया गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के समाधि स्थल चंद्रगिरी तीर्थ डोंगरगढ़ सेनिर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर तथा मुनि श्री पवित्र सागर स संघ एवं आर्यिका रत्न गुरुमति माताजी एवं आर्यिकारत्न दृणमति माती सहित सभी 46 माताजी का श्री सम्पदे शिखर तीर्थ की ओर विहार जारी है। श्री सुमतिनाथ दि. जैन बड़ा मंदिर दुर्गा में आर्यिका संघ दर्शनार्थ मंदिर जी में पधारी एवं जिनविंव के दर्शन तथा विराजमान मुनिसंध की वंदना की रायपुर दि. जैन बड़ा मंदिर मालवीय रोड़ के अध्यक्ष यशवंत जैन सचिव सुजीत जैन तथा कोषाध्यक्ष दिलीप जैन लोकेश जैन, महावीर जैन, विजय जैन, रवि जैन सहित राष्ट्रीय प्रवका अविनाश जैन विद्यावाणी ने श्री फल अर्पित कर मुनिसंध और आर्यिकासंध को श्री फल अर्पित कर रायपुर पधारने का अनुरोध किया।

-अविनाश जैन, मनीष जैन

आर्यिका सौभाग्यमती माता जी का 45वाँ अवतरण दिवस महोत्सव सेनगढ़

मंदिर नागपुर में सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में सम्पन्न

नागपुर (विश्व परिवार)। परम पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका सौभाग्यमती माता जी का 45 वा अवतरण दिवस महोत्सव सेनगढ़ मंदिर नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में सकल दिगंबर जैन समाज नागपुर के तत्वावधान में संपन्न हुआ। इस अवसर पर दुर्गा, वैशालीनगर भिलाई, राजनादगांव, नवापारा राजीम, नैला, सोलापुर, सागर, बेलाजी एवं आसपास से पधारे बहुत सारे भक्तगणों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करा कर माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। नागपुर नगर के सभी जिनालयों के पदाधिकारीएवं सदस्य उपस्थित रहे।

इस अवसर पर परम पूज्य माता जी के पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य परम गुरु भक्त श्री मनीष जी दिव्याजी सोगानी वैशाली नगर भिलाई परिवार ने प्राप्त किया। माता जी के चरण कमल पर रतन वृष्टि एवं पुष्प वृष्टि करने का सौभाग्य श्रीमान नीरज जी श्वेता जी गंगवाल परिवार नवापारा राजिम छत्तीसगढ़ ने प्राप्त किया। माता जी की मंगल आरती सूर्य नगर दिगंबर जैन समाज के द्वारा की गई। माताजी को वस्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्रीमति मंगला ताई खेड़कर परिवार एवं जिनवाणी भेंट करने का सौभाग्य श्रीमती सुमिति जयकुमार कडमकर परिवार को प्राप्त हुआ। सेनगढ़ मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीमान सतीश जी पेंडारी परिवार ने आए हुए समस्त भक्तगणों का भावभीना अभिनंदन तिलक, श्रीफल भेंट कर किया। सान्ध में विशेष रूप से सागर मध्य प्रदेश से पधारे हुए पूज्य माताजी के गृहस्थ जीवन के माता-पिता श्रीमान राजेंद्र कुमार जी पुष्पा देवी एवं संघपति श्री वीर कुमार जी पद्मा जी



दोषी अकलुज महाराष्ट्र वालों का भी सत्कार किया गया। छत्तीसगढ़ जैन समाज के महामंत्री एवं नैला समाज के अध्यक्ष श्रीमान सुशील जी नूतन जी लुहाड़िया भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। आयोजन का सफल संचालन सूरज पेंडारी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में पूज्य माताजी ने अपने आशीर्चन में समस्त लोगों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि इस दिन को माता-पिता के उपकार दिवस के रूप में मनाया चाहिए। आज का दिन माता-पिता के उपकारों को स्मरण करने का है जिन्होंने हमें जन्म देकर के इस योग्य बनाया है कि आज हम इस स्थान पर विराजमान हैं। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि जीवन के अंत समय में अपने माता-पिता की सेवा करते हुए उनके समाधि मरण को सार्थक बनाकर के अपने दायित्व का निर्वाह करें इस अवसर पर विशेष रूप से श्रीमान मनीष कुमार जी दिव्या जी सोगानी परिवार ने पूज्य माताजी के निर्देशन में निर्मित हो रहे मुनिसुत्र सौभाग्य तीर्थ पर संत भवन की प्रथम मंजिल पर नामकरण करने हेतु 21 लाख रुपए की धनराशि देने की स्वीकृति प्रदान की गई।

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी ससंध का मंगल विहार सिरसाड मुंबई से गणाचार्य विरागसागर जी महाराज समाधिस्थल जालना पंचकल्याणक महोत्सव के लिए हुआ

मुंबई/महाराष्ट्र (विश्व परिवार)। विशुद्धरत्न श्री सिद्धसागर महाराज जी ने बताया किआचार्य विशुद्धसागर जी ससंध का मंगल विहार सिरसाड मुंबई से गणाचार्य विरागसागर जी महाराज समाधि स्थली जालना पंचकल्याणक महोत्सव के लिए हुआ। चर्या शिरोमणि आचार्य भगवन श्री विशुद्धसागर महाराज जी ससंध के विहार के लिए संचपत्नी बनने का सौभाग्य सोलापुर निवासी सौ प्रेरणा व श्री राजकुमार अमृतलाल दोशी, सौ निशा व श्री नुतनकुमार कचरसुन्द चंद गांधी, सौ योगिता व श्री संतोष जयकुमार शहा परिवार को संघपति बनने का परम सौभाग्य मिला।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद कोलहापुर के कार्याध्यक्ष श्री अभिषेक अशोक पाटील ने बताया कि सोलापुर के दोशी, गांधी और शहा परिवार को सौभाग्यशाली परिवार को प.पु. सौम्यसागर महाराज जी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। 5 मार्च से 26 एप्रिल 2025 तक सोलापुर निवासी दोशी, गांधी और शहा परिवार को मुंबई-जालना- इंदोर तक की पद विहार पावन यात्रा का संघपति बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भक्ती का



महाकुंभ आया है, गुरुदेव की सेवा में डुबने का मौका आया हैं। यह दायित्व उनकी गुरु भक्ति, धार्मिक समर्पण और सेवा भावना का प्रतीक है। श्री अभिषेक अशोक पाटील ने कहा कि सोलापुर के दोशी, गांधी और शहा परिवार आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के अन्य भक्त हैं। उनका आचार्य श्री के प्रति श्रद्धा, समर्पण और गुरु भक्ति निःस्वार्थ और गहरी आस्था से परिपूर्ण है। परम पूज्य युग सर्वोत्कृष्ट समाधि धारक गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

जी के जिस धरा पर अपने नश्वर देह का त्याग कर उत्कृष्ट समाधि को प्राप्त किया उसी पावन धरा पर गणाचार्य विराग सागर जी महाराज के लघु नंदन चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी ससंध सानिध्य में अक्षय निर्वाण स्थली पर नव निर्माणधीन श्री विराग अक्षय समाधि तीर्थ पर भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंध के सानिध्य में 21 मार्च से 25 मार्च 2025 तक प.पु. गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज समाधि स्थल में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया हैं। 7 एप्रिल से 12 एप्रिल 2025 तक उन पावापुरी में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र श्री उन पावापुरी जि. खरगोन मध्यप्रदेश में आचार्य भगवन श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंध के सानिध्य में आयोजित किया हैं। खरगोन में 14 से 16 एप्रिल तक भव्य वेडी शिखर प्रतिष्ठा दिगंबर जैन पोरवाड मंदिर में आचार्य भगवन श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंध के सानिध्य में आयोजित किया हैं। नमोस्तु शासन जयवंत हो। -अभिषेक अशोक पाटील

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति का महादेव कावरे ने पदभार ग्रहण किया

रायपुर (विश्व परिवार)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति का पदभार एवं कार्य दायित्व श्री महादेव कावरे आईएएस, आयुक्त रायपुर संभाग ने आज 5 मार्च 2025 से ग्रहण किया। इस संबंध में विश्वविद्यालय ने विधिवत अधिसूचना जारी कर माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय को सूसूचित किया है।

उल्लेखनीय है कि कुलपति महोदय का विस्तृत प्रशासनिक एवं सुदीर्घ अनुभव है। नवनियुक्त कुलपति का स्वागत कुलसचिव श्री सुनील कुमार शर्मा रा.प्र.से. ने किया। तत्पश्चात एक संक्षिप्त कार्यक्रम में निवर्तमान कुलपति प्रोफेसर श्री बालदेव भाई शर्मा को विदाई, स्मृति चिन्ह और शाल श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी



एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कुलपति ने विश्वविद्यालय प्रशासन को निर्देशित किया है कि अकादमिक और शैक्षणिक गतिविधियों के

संचालन में पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाए। विश्वविद्यालय में अद्यनरत छात्र-छात्राओं की समग्र उन्नति एवं उनकी प्रतिभा के निखार के लिए अध्ययन विभाग में नियमित अध्यापन के साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान करें। कुलपति महोदय के द्वारा कुलसचिव को निर्देशित किया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पत्रकारिता, मीडिया शिक्षा और मीडिया इंस्टीट्यूट के साथ लिंकेज कार्यक्रमों एवं अकादमिक करिकुलम को प्राथमिकता के साथ बेहतर एवं नवोन्मेषी रूप से क्रियान्वित करें। मीडिया शिक्षा में रोजगारोन्मुखी ट्रेनिंग में विशेष पहल हो ङ्क श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे जी की प्रेरणा और आदर्श से प्रेरित यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मीडिया गुरुकुल के रूप में देश भर में प्रतिष्ठा अर्जित करें, यह हम सब का प्रयास हो।

सभी राजनैतिक दलों को गौमाता को राष्ट्रमाता स्वीकारने की सहमति देने 17 मार्च तक अंतिम अवसर : साई मसन्द

परमधर्मसंसद के परमाध्यक्ष शंकराचार्य स्वामीश्री अविमुक्तेश्वरानन्द महाराज 17 मार्च को इस सम्बन्ध में रहेंगे दिल्ली में उपस्थित

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के पूज्यपाद चारों शंकराचार्यों के नेतृत्व व मार्गदर्शन में कार्यरत भारत सहित एक सौ देशों के 1008 धार्मिक व सामाजिक प्रतिभाओं के संगठन परम धर्म संसद 1008 द्वारा पिछले दो वर्षों से देश में गौ प्रतिष्ठा अभियान चला कर केन्द्र व सभी राज्य सरकारों से गौमाता को पशु सूची से बाहर कर उसे राष्ट्रमाता स्वीकारे जाने का प्रस्ताव पारित करने का लगातार अनुरोध किया गया है।

उपरोक्त संदर्भ में पिछले साल केवल एक राज्य महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिन्दे ने चुनाव से पहले परम धर्म संसद 1008 के परमाध्यक्ष, ज्योतिर्मठ के पूज्यपाद शंकराचार्य स्वामीश्री अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती महाराज की उपस्थिति में गौमाता को महाराष्ट्र की राज्यमाता घोषित कर राज्य में उसके भरण-पोषण की सुसूचित व्यवस्था किए जाने की घोषणा की गई है।

हाल ही में प्रयागराज में सम्पन्न कुम्भ मेले में परम धर्म संसद 1008 के एक माह तक चले सत्र के दौरान लिए गए एक निर्णय के अनुसार देश के सभी सत्तारूढ़ व विपक्षी राजनैतिक दलों को गौमाता को राष्ट्रमाता स्वीकारने की सहमति देने 17 मार्च तक अंतिम अवसर दिया गया है। धर्म संसद में देश के



पूज्यपाद तीन शंकराचार्यों व सैकड़ों अन्य विख्यात धार्मिक व सामाजिक प्रतिभाओं ने भाग लिया। लिए गए उक्त निर्णय के अंतर्गत परम धर्म संसद 1008 के परमाध्यक्ष पूज्यपाद शंकराचार्य स्वामीश्री अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती महाराज धर्म संसद के सैकड़ों प्रतिनिधियों के साथ 17 मार्च को प्रातः 7 बजे से शाम बजे 5 तक इस सम्बन्ध में दिल्ली के रामलीला मैदान में उपस्थित रहेंगे। यह जानकारी धर्म संसद के संगठन मंत्री रायपुर निवासी मसन्द सेवाश्रम के पीठाधीश साई जलकुमार मसन्द ने दी।

उल्लेखनीय है कि साई मसन्द साहिब को परम धर्म संसद 1008 का संगठन मंत्री गत् दिनों प्रयागराज में सम्पन्न धर्म संसद के समापन समारोह के दौरान नियुक्त किया गया। वे पिछले तेरह वर्षों से देश के पूज्यपाद शंकराचार्यों व सैकड़ों अन्य महान संतों के सहयोग से देश में सनातन वैदिक सिद्धांतों पर आधारित शासन स्थापित करवाने भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का अभियान चला रहे हैं। -मयंक मसन्द

संक्षिप्त समाचार

सट्टा संचालन कर रहा आरोपी भेजा गया जेल पट्टी

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। जिले की लालबाग पुलिस से सट्टा संचालन करने के लिए आरोपी को गिरफ्तार किया है तथा उसके पास से 01 नग सट्टा पट्टी, नगदी रकम 1150 रुपये जप्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार जिला पुलिस द्वारा चलाये जा रहे अवैध शराब, जुआ, सट्टा की रोकथाम अभियान के तहत दिनांक 03/03/2025 को थाना लालबाग स्टाफ व पेट्रोलिंग पार्टी के इलाकाहाजा पेट्रोलिंग पर रवाना किया गया था कि ग्राम ढाबा में किसी व्यक्ति के द्वारा लोगों को इकट्ठा कर विभिन्न अंकों पर रुपये पैसे का दाव लगाकर सट्टा पट्टी नामक जुआ लिख रहा है की सूचना पर थाना प्रभारी लालबाग के नेतृत्व में ग्राम ढाबा पहुंचकर रेड कार्यावाही किया गया जो पुलिस को देखकर लिखने वाले लोग भाग गये सट्टा पट्टी लिखने वाले को पकड़ा गया जिसे नाम पूछने पर अपना नाम हिरेंद्र भारती पिता लालचंद भारती उम्र 34 वर्ष निवासी वार्ड नं. 04 नया ढाबा थाना लालबाग जिला राजनांदगांव का रहने वाला बताया।

शहर के अलग-अलग स्थानों से पकड़े गये आरोपी

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। जिला पुलिस ने शहर के अलग अलग स्थानों से अवैध रूप से शराब बिक्री,चाकू लहराने तथा शांति भंग करने वाले आरोपियों के विरुद्ध कार्यावाही की है। बता दें कि पुलिस अधीक्षक राजनांदगांव मोहित गर्ग के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नाथक राजनांदगांव के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी निरीक्षक एमन साहू के नेतृत्व मे थाना बसंतपुर क्षेत्र में असामाजिक तत्वों, शराब कोचिया एवं नशीले पदार्थों के बिक्री में संलिप्त लोगों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत दिनांक 04.03.2025 को मुखबीर से सूचना प्राप्त हुई, कि मोहारा बायपास सीआईटी रोड के पास 01 व्यक्ति अवैध रूप से शराब बिक्री कर रहा है कि सूचना पर मौके पर पहुंचकर रेड कार्यावाही कर आरोपी पीताम्बर साहू को अवैध रूप से शराब बिक्री करते हुए पकड़ा गया तथा आरोपी के कब्जे से 19 पौवा देशी शराब जप्त कर आरोपी के विरुद्ध आबकारी एक्ट के तहत कार्यावाही किया गया। इसी प्रकार सूचना पर ही सर्किट हाउस गेट के सामने आम स्थान पर हाथ में लोहे का धारदार चाकू रख कर आने जाने वाले लोगों को भयभीत करने वाले आरोपी जीतेश वैदेहे उर्फ डैनी को घेराबंदी कर पकड़ा गया तथा आरोपी के विरुद्ध आर्म्स एक्ट के तहत आर्म्स एक्ट तहत कार्यावाही किया गया।

कलेक्टर अग्रवाल ने सुनी लोगों की समस्याएं

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टोरेट सभाकक्ष में आयोजित जनदर्शन में आज जिले के अलग-अलग क्षेत्र के लोग अपनी-अपनी मांग, समस्याएं एवं शिकायतें लेकर आये। कलेक्टर श्री दीपक कुमार अग्रवाल ने जनदर्शन में आए सभी लोगों की समस्याओं को सुना। साथ ही समस्याओं के निराकरण के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिये। आज जनदर्शन में 20 आवेदन प्राप्त हुए। जनदर्शन में ग्राम नागाबुड़ा के लखन ने मुआवजा की राशि दिलाने, ग्राम मजरकट्टा के अंकित सोनी ने अनुकंपा नियुक्ति प्रदान करने, ग्राम जंगलधवलपुर की देवकी बाई यादव ने प्रधानमंत्री आवास प्रदान करने एवं ग्राम परसुलीडीह की श्याम भाई ने प्रधानमंत्री आवास, नंदकुमार साहू ने प्रधानमंत्री आवास, कोपरा के तिलक सेन ने भूमिहीन कृषक योजना के तहत राशि प्रदाय करने के लिए आवेदन प्रस्तुत किये। कलेक्टर ने आवेदनों को गंभीरतापूर्वक लेते हुए अधिकारियों को निराकरण के लिए आवश्यक निर्देश दिये।

आयुष्मान कार्ड मेगा कैंप 17 मार्च से, कलेक्टर ने दिए व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर हरिस एस ने स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए मेगा कैंप का आयोजन 17 से 20 मार्च को करने हेतु कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए। मेगा कैंप का आयोजन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किया जाएगा। इसके लिए ग्राम स्तर पर व्यापक प्रचार-प्रसार करें जिसमें ग्राम स्तर के मैदानी अमलों, मितानिन, एएनएम का उपयोग कर सभी पात्र हितग्राहियों को कैंप तक लाए, साथ ही शहरी क्षेत्रों के सभी वार्डों में समाज सेवी संस्थान, रेडक्रॉस, एनसीसी के जवानों का सहयोग लिया जाए। कलेक्टर ने कहा कि कैंप में पहले से बने कार्ड का भी अपडेट करें, मृत व्यक्तियों का लिस्टेड भी करें जिससे राशन कार्ड से मृत व्यक्ति का नाम हटाया जा सके। इसके अलावा उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अन्य योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा किए। कलेक्टर मंगलवार को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में समय सीमा की बैठक ले रहे थे। बैठक में कलेक्टर ने नियद नेल्लनार योजना की पोर्टल एंट्री स्टेटस पर चर्चा किए, विभागीय योजना के पात्र हितग्राहियों का



पोर्टल में अद्यतन करवाएं। विभाग के द्वारा योजनाओं के संबंध में एक्सल शीट में ब्लॉक वार अपडेट जानकारी की समीक्षा किया। नियद नेल्लनार योजना के तहत 38 चिन्हांकित योजनाओं के क्रियान्वयन और पात्र हितग्राहियों को लाभ देने पर चर्चा किए। समय सीमा की बैठक में जनदर्शन, जन शिकायत के प्रकरणों पर चर्चा कर विभागों के अधिकारियों को निराकरण के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने

विभागीय योजनाओं की समीक्षा किए जिसमें प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रा.) की भौतिक प्रगति की समीक्षा कर कहा कि लिंटल एवं स्लैब लेवल वाले निर्माणाधीन भवनों को इस माह के अंत तक पूर्ण करवाएं। स्वच्छ भारत मिशन के तहत ओडीएफ प्लस की प्रगति, पर्यटन स्थलों से भी कचरा कलेक्शन और साप्ताहिक बाजारों से कचरा कलेक्शन पर चर्चा किए। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका

मिशन के तहत इंटरप्राइज फाइनेंस प्रोग्रेस रिपोर्ट पर त्रुषा सुविधा देने हेतु बैंकों के साथ हुए बैठक की समीक्षा किए। मनरेगा के तहत निर्माणाधीन आंगनवाड़ी भवन की प्रगति की समीक्षा किए, उन्होंने राशि मिलने के बाद काम नहीं करवाने वाले पंचायतों में आरआरसी के प्रकरण दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही करें। मनरेगा के तहत पीडीएस दुकान निर्माण कार्य की भौतिक प्रगति की समीक्षा किया। एनएमडीसी के

सीएसआर मद से स्वीकृत कार्यों का उपयोगिता प्रमाण पत्र, पूर्णता प्रमाण पत्र, मूल्यांकन कर निर्माण कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट देने के निर्देश दिए साथ ही अप्रारंभ कार्यों की राशि को भी वापस करवाने के भी निर्देश दिए। कलेक्टर ने खाद्यान्न भंडारण की स्थिति, भंडारण हेतु राशि जमा करने, धान उठाव की स्थिति, धान उठाव हेतु परिवहन की व्यवस्था पर चर्चाकर उन्होंने कहा कि प्रतिदिन दो हजार क्विंटल उठाव का लक्ष्य रखकर उठाव करवाएं साथ ही दूरस्थ खरीदी केंद्रों को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। कृषि विभाग के अधिकारी को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के लिए पंजीयन को गति देने के निर्देश दिए। इसके अलावा अन्य सम्बद्ध विभागों के किसान क्रेडिट कार्य की प्रगति और बैंकों से प्रकरण पर चर्चा किए। स्कूल शिक्षा से जाति प्रमाण पत्र के आवेदनों को अपलोड की स्थिति और राजस्व कार्यालयों द्वारा की गई कार्यावाही की समीक्षा किए। उन्होंने जाति प्रमाण पत्र के लक्ष्य के आधार पर सभी कार्यवाही इस माह के अंत तक पूर्ण करवाएं।

कलेक्टर तुलिका प्रजापति ने समय सीमा की बैठक में लंबित प्रकरणों की समीक्षा की

कर्मचारी हित को ध्यान में रखकर लंबित प्रकरणों का निराकरण करने कहा

मोहला(विश्व परिवार)। कलेक्टर तुलिका प्रजापति ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अधिकारियों की बैठक लेकर लंबित प्रकरणों की समीक्षा की। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अपने विभागों में लंबित प्रकरणों का अविलंब निराकरण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने एक-एक कर विभागवार लंबित प्रकरणों के अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित करते



हुए कहा कि जन सरोकारों से जुड़े प्रकरणों का निराकरण करने में गंभीरता का परिचय दें। जनहित के मामलों के निराकरण में समय सीमा का विशेष ध्यान रखें। अकारण कोई भी प्रकरण लंबित ना रहें। कलेक्टर ने बैठक में विभिन्न

विभागों में संचालित हितग्राही मूलक योजनाओं के क्रियान्वयन और प्रगति की जानकारी ली। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि हितग्राही मूलक योजनाओं का क्रियान्वयन प्राथमिकता के साथ करें। साथ

ही योजनाओं का लाभ लेने से छूटे हुए अधिक से अधिक पात्र हितग्राहियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिये गये। विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत जिले को मिले लक्ष्य पूर्ति की दिशा में सार्थक कार्यवाही करने कहा गया है।

पिछला बजट ज्ञान पर फोकस था,यह बजट छत्तीसगढ़ कि गति पर फोकस है - पूर्व विधायक रंजना साहू

छत्तीसगढ़ के विकास का बजट सिद्ध होगा 2025 का बजट : रंजना साहू

धमतरी(विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू ने विधानसभा में विष्णुदेव साय सरकार की बजट जारी होने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा के विष्णु सरकार के बजट में विकसित छत्तीसगढ़ का विजन दिखाई दे रहा है, जिसमें पहले बजट में शिक्षा पर ध्यान दिया गया था और इस बजट में छत्तीसगढ़ के विकास की गति को आगे बढ़ने पर ध्यान दिया गया है। छत्तीसगढ़ के विकास का बजट सिद्ध होगा 2025 का यह बजट, इसमें छत्तीसगढ़ के सभी संभागों को ध्यान में रखते हुए विकास की नई बजट पेश की गई है जिसमें पेट्रोल के वेट में कटौती, कर्मचारियों के लिए तोहफ़ा दिए, पेंशन फंड में निवेश, सुरक्षा की दृष्टिकोण से पुलिस प्रशासन में नवीन भारत रक्षित

वाहनी का गठन, स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षकों की भर्ती, बस्तर क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों का प्रावधान, डेयरी विकास, समग्र योजना में फ़ंड का प्रावधान, कृषि पंपों के निशुल्क विद्युत प्रदाय हेतु योजना का शुभारंभ, शहरी क्षेत्रों व ग्रामीण क्षेत्रों में आंगनबाड़ी केंद्रों में विस्तार, स्वच्छता, पेयजल, नगरी निकायों में अधोसंरचना विकास कार्य के लिए प्रावधान, आईटीआई और पॉलिटेक्निक कॉलेज का अपग्रेशन, नवीन शासकीय नर्सिंग कॉलेज का निर्माण, तीर्थ यात्रा योजना का विस्तार, पूड पार्कों का निर्माण, मुख्यमंत्री रिंग रोड योजना जैसे अनेक विकास कार्य को ध्यान में रखकर यह बजट पेश की गई है यह बजट छत्तीसगढ़ में सुशासन की बजट है श्रीमती रंजना साहू ने आगे कहा कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेई जी की देन छत्तीसगढ़ प्रदेश जिसमें हमने बनाया है हम ही संवर्गेण के मूल सिद्धांत के साथ विकसित छत्तीसगढ़ का बजट है।

सरकार के दबाव में लोकतंत्र की हत्या कर रहे कलेक्टर - तुषार ठाकुर

कांकेर(विश्व परिवार)। युवा कांग्रेस के प्रदेश महासचिव व पार्षद तुषार ठाकुर ने प्रदेश के कई कलेक्टरों पर आरोप लगाया है कि सरकार सत्ता के दबाव में जहां-जहां कांग्रेस के जनपद सदस्य बहुमत में है, सिर्फ वही के कलेक्टर ऐन पेज कारण बता कर चुनाव को रोक रहे हैं, और उल्टा आरोप कांग्रेस विधायक सावित्री मंडावी जी पर सदस्यों को दबाव का आरोप लगा रहे, जो की घोर निंदनीय है, सरकार सत्ता का दुरुपयोग कर खरीद पुख्ता से प्रदेश ही नहीं पूरे देश में वीजेपी ने जो लोकतंत्र की हत्या कर सत्ता हतियाई हैं, ओर आरोप हमारे सिर्फ एक विधायक जिसकी ना सरकार है ना सत्ता ओर येसा हैं तो क्या एक महिला विधायक सावित्री मांडवी पूरे सरकार सत्ता पर भारी है, बीजेपी ऐसी ओझी राजनीत करेगी तो युवा कांग्रेस ने आज मुख्यमंत्री और जिला प्रशासन का सिर्फ पुतला फूँका हैं, दुबारा चुनाव अकारण रद्द हुआ तो जिला प्रशासन का घेराव कर चक्का जाम भी किया जायेगा।

अवैध शराब पर कड़ी कार्रवाई करने के कलेक्टर ने दिए निर्देश

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री दीपक अग्रवाल ने आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समय सीमा की समीक्षा बैठक ली। बैठक में उन्होंने विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए प्रातिरत कार्यों की जानकारी ली, साथ ही आवश्यक निर्देश भी दिए। उन्होंने जिले में अवैध शराब की खरीदी बिक्री से संबंधी प्रकरणों पर कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने आबकारी एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों को उनकी टीमों को सक्रिय कर लगातार निरीक्षण करने एवं प्राप्त शिकायतों पर सख्ती से कार्रवाई करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि जिले में अवैध शराब की खरीदी बिक्री नहीं होनी चाहिए। इन कार्यों में संलिप्त संबंधितों पर कड़ी निगरानी रखकर आवश्यक

कार्रवाई करें। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने बैठक में सड़कों में आवारा मवेशियों के रोकथाम के लिए चलाये जा रहे अभियान में तेजी लाने के निर्देश दिये। उन्होंने आवारा मवेशियों के कारण होने वाले सड़क दुर्घटनाओं को रोकने सड़कों से आवारा पशुओं को हटाने लगातार अभियान चलाने को कहा। कलेक्टर ने जिला कार्यालय सहित सभी शासकीय कार्यालयों में कार्यालयीन समय में अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए बायोमेट्रिक के माध्यम से उपस्थित के लिए कर्मचारियों की पंजीयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने शासकीय कर्मियों की अनिवार्यतः बायोमेट्रिक के माध्यम से उपस्थिति दर्ज करने के कार्य को

सुचारू रूप से लागू करने के लिए दिए। पंजीयन के कार्य के लिए छूटे हुए विभागों के अधिकारियों सहित अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का अनिवार्यतः पंजीयन करने के निर्देश दिए। इस दौरान बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्री जीआर मरकाम, अपर कलेक्टर श्री अरविन्द पाण्डेय, श्री नवीन भगत सहित जिला अधिकारीगण मौजूद रहे। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने समय-सीमा की समीक्षा बैठक में विभिन्न योजनाओं के संचुरेशन की स्थिति की भी जानकारी ली। उन्होंने राशन कार्ड, वन अधिकार पट्टा, आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से पूरक पोषण आहार वितरण, एनएनसी रजिस्ट्रेशन, कौशल विकास पंजीयन, स्वास्थ्य कार्ड, जाति, निवास प्रमाण पत्र एवं श्रमिक

पंजीयन आदि की जानकारी लेकर एंट्री सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने बैठक में किसान पंजीयन की स्थिति की भी जानकारी ली। उन्होंने गांव में मुनादी करा कर किसानों का पंजीयन करने कैंप लगाने के निर्देश दिए। इसके लिए सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं पटवारी को सक्रिय कर गांव में कैंप लगाने को कहा। साथ ही वीएलई का मैपिंग कर सभी किसानों का हल्का वार पंजीयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने लंबित पेंशन प्रकरणों, आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम, अनाधिकृत अनुपस्थिति पर कार्रवाई एवं अन्य विभागीय एजेंडों पर चर्चा कर कार्यों में तेजी लाने आवश्यक निर्देश भी दिये।

जिले में बस्तर पंडुम कार्यक्रम को सफल बनाने कार्ययोजना तैयार करें : कलेक्टर

नारायणपुर(विश्व परिवार)। साप्ताहिक समय सीमा की बैठक कलेक्टर प्रसिद्धा ममगाई द्वारा जिला कार्यालय के सभाकक्ष में जिला स्तरीय अधिकारियों का लिया गया। उन्होंने नियद नेल्लनार के कार्यों की गहन समीक्षा करते हुए स्वीकृत निर्माण कार्यों को प्राथमिकता के साथ पूर्ण कराने अधिकारियों को निर्देश दिये। उन्होंने नियद नेल्लनार योजनांतर्गत जिले के चिन्हांकित ग्रामों में स्वीकृत निर्माण कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराने जिला स्तरीय अधिकारियों से कार्य के प्रगति का समीक्षा किया। उन्होंने नियद नेल्लनार योजनांतर्गत पेयजल, सड़क निर्माण, सौर उर्जा, नलजल योजना, आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, आयुष्मान कार्ड, बैंक खाता खुलवाने, आंगनबाड़ी भवन, खेल मैदान, लाईब्रेरी और उपस्वास्थ्य केन्द्र निर्माण कार्ड के निर्देश दिए। उन्होंने अबुझमाडु मैराथन की सॉपे गए जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक निर्वहन करने उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किये। उन्होंने जिले आश्रम छात्रावासों में किसी भी प्रकार



लापरवाही बरतने पर कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ममगाई ने कलेक्टर जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों का निराकरण करने, ग्राम पंचायत कुंदला के ग्राम आलनार के निर्माणाधीन आंगनबाड़ी केन्द्र, प्रधानमंत्री आवास निर्माण की प्रगती, गढ़बेंगाल में निर्माणाधीन भवन की गुणवताहीन होने, क्रीड़ा परिसर मैदान में स्थित सुविधा उपलब्ध कराने, नियद

नेल्लनार योजनांतर्गत संचालित निर्माण कार्यों को समय पर पुर्ण करने, जल जीवन मिशन अंतर्गत शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने स्वच्छ भारत मिशन शहरी अंतर्गत नगरीय निकायों में इन्टर् वेक्ट के निष्पादन हेतु सेनिटरी लैण्डफिल स्थापित करने, जिले के आत्म समर्पित नक्सली और नक्सल पीड़ित परिवार के सदस्यों को शासकीय सेवा में नियुक्ति देने तथा पुनर्वास योजना से

लाभान्वित तथा नक्सली हिंसा में मारे गये आम नागरिकों के वारिशात को शासन की पुनर्वास योजना के तहत नौकरी प्रदाय करने, जिले में विकासखण्ड एवं जिला स्तर पर बस्तर पंडुम कार्यक्रम जनजातीय कला और संस्कृति को दुनिया के सामने लाने उत्सव को सफल आयोजित करने आदिवासी विकास विभाग के सहायक आयुक्त को कार्य योजना तैयार करने निर्देशित किए।

अश्लील विडियो बनाकर सोशल मिडिया मे वायरल करने वाला आरोपी भेजा गया जेल

कांकेर(विश्व परिवार)। कांकेर पुलिस ने अश्लील विडियो बनाकर सोशल मिडिया मे वायरल करने वाला आरोपी चमन साहू को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 03.03.2025 को प्रकरण की पीडिता थाना आकर रिपोर्ट दर्ज करायी कि वर्ष 2014-15 में आरोपी चमन साहू निवासी गोविन्दपुर के साथ जान पहचान हुआ था जो घर मे भी आना जाना करता था। वर्ष 2021-22 मे एक दिन शहर के एक होटल मे दोस्तो की पार्टी थी जिसमे पीडिता, आरोपी एवं दो अन्य दोस्त भी पार्टी में आये थे जो पार्टी के बाद अन्य दो दोस्त वहां से चले गये थे पीडिता और आरोपी रह गये थे आरोपी के द्वारा पीडिता को नशे के हालात में पीडिता के मर्जी के बिना पीडिता का अश्लील विडियो बना लिया जिसको पीडिता को जानकारी नही थी। आरोपी के द्वारा विडियो बनाने के बाद विडियो को पीडिता को दिखाया जिसे पीडिता देखकर विडियो को डिलिट करने बोलने पर आरोपी चमन साहू के द्वारा विडियो को डिलिट करने का नाटक कर विडियो को डिलिट नहीं किया गया और उक्त अश्लील विडियो को सोशल मिडिया में वायरल कर दिया कि रिपोर्ट पर धारा 294 बीएनएस 67,67 (ए) आईटी एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुये थाना प्रभारी कांकेर मनीष नागर के द्वारा थाना से उप निरी सुरेन्द्र मानिकपुरी, मप्रआर हितेश्वरी चेलक, प्र.आर. गीतेश्वर कुलदीप, आर अनिल कुमार का टीम बनाकर त्वरित कार्यवाही कर आरोपी चमन साहू का पतासाजी कर आरोपी को गिर. कर प्रकरण मे इस्तेमाल किया गया मोबाईल को जब किया गया एवं आरोपी को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया।

